Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 9

हिन्दी

कृतिका (गद्य खंड)

अध्याय-1 : इस जल प्रलय में (फणीश्वरनाथ रेणु)

भाग - 2

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

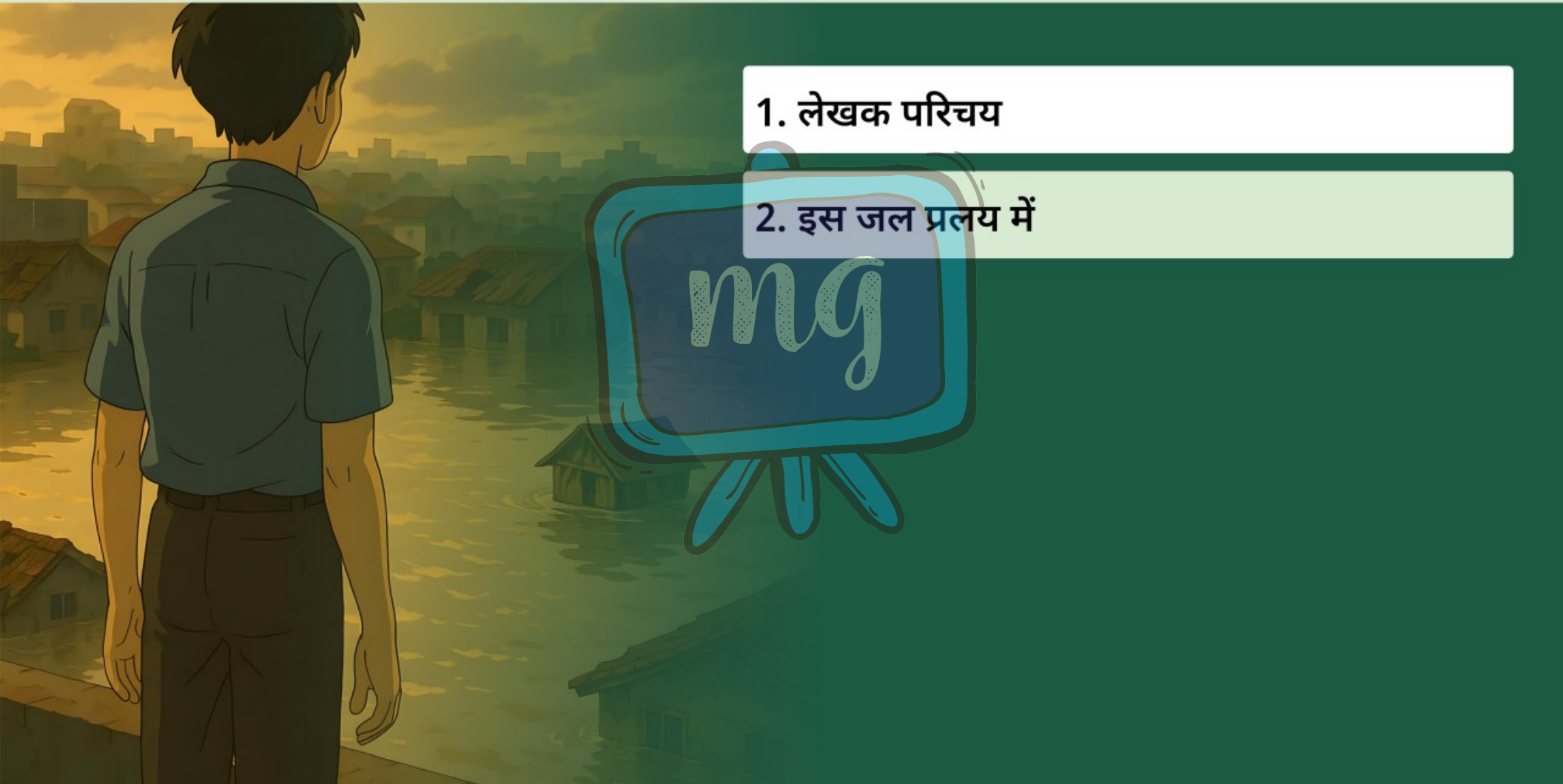

1. लेखक परिचय
2. इस जल प्रलय में

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



दोपहर में सूचना मिली, गोलघर जल से घिर गया है! (यों, सूचना बाँग्ला में इस वाक्य से मिली थी 'जानो! गोलघर डूबे गेछे!') और पाँच बजे जब कॉफ़ी हाउस जाने के लिए (तथा शहर का हाल मालूम करने) निकला, तो रिक्शेवाले ने हँसकर कहा- "अब कहाँ जाइएगा? कॉफ़ी हाउस में तो 'अबले' पानी आ गया होगा।" "चलो, पानी कैसे घुस गया है, वही देखना है।"

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



कहकर हम रिक्शा पर बैठ गए। साथ में नयी कविता के एक विशेषज्ञ व्याख्याता-आचार्य-कवि मित्र थे, जो मेरी अनवरत+अनर्गल+अनगढ़ गद्यमय स्वगतोक्ति से कभी बोर नहीं होते (धन्य हैं!)।

अनवरत	– निरंतर, लगातार
अनर्गल	– बेतुकी, विचारहीन, मनमानी
अनगढ़	– बेडौल, टेढ़ा-मेढ़ा
स्वगतोक्ति	– अपने आप में कुछ बोलना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मोटर, स्कूटर, ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, ट्रक, टमटम, साइकिल, रिक्शा पर और पैदल लोग पानी देखने जा रहे हैं, लोग पानी देखकर लौट रहे हैं। देखने वालों की आँखों में, जुबान पर एक ही जिज्ञासा "पानी कहाँ तक आ गया है?" देखकर लौटते हुए लोगों की बातचीत "फ्रेजर रोड पर आ गया! आ गया क्या, पार कर गया। श्रीकृष्णापुरी, पाटलिपुत्र कालोनी, बोरिंग रोड? इंडस्ट्रियल एरिया का कहीं पता नहीं... अब भट्टाचार्जी रोड पर पानी आ गया होगा।...

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



छातीभर पानी है। वीमेंस कॉलेज के पास 'डुबाव-पानी' है.।... आ रहा है... आ गया...घुस गया...डूब गया... डूब गया... बह गया!“हम जब कॉफ़ी हाउस के पास पहुँचे, कॉफ़ी हाउस बंद कर दिया गया था। सड़क के एक किनारे एक मोटी डोरी की शक्ल में गेरुआ झाग फेन में उलझा पानी तेजी से सरकता आ रहा था। मैंने कहा "आचार्य जी, आगे जाने की जरूरत नहीं। वो देखिए-आ रहा है... मृत्यु का तरल दूत!"

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



आतंक के मारे मेरे दोनों हाथ बरबस जुड़ गए और सभय प्रणाम-निवेदन में मेरे मुँह से कुछ अस्फुट शब्द निकले (हाँ, मैं बहुत कायर और डरपोक हूँ!)। रिक्शावाला बहादुर है कहता है 'चलिए न, थोड़ा और आगे!'

भीड़ का एक आदमी बोला "ए रिक्शा, करेंट बहुत तेज है। आगे मत जाओ।"मैंने रिक्शावाले से अनुनय भरे स्वर में कहा- "लौटा ले भैया। आगे बढ़ने की जरूरत नहीं।"

अस्फुट – अस्पष्ट

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

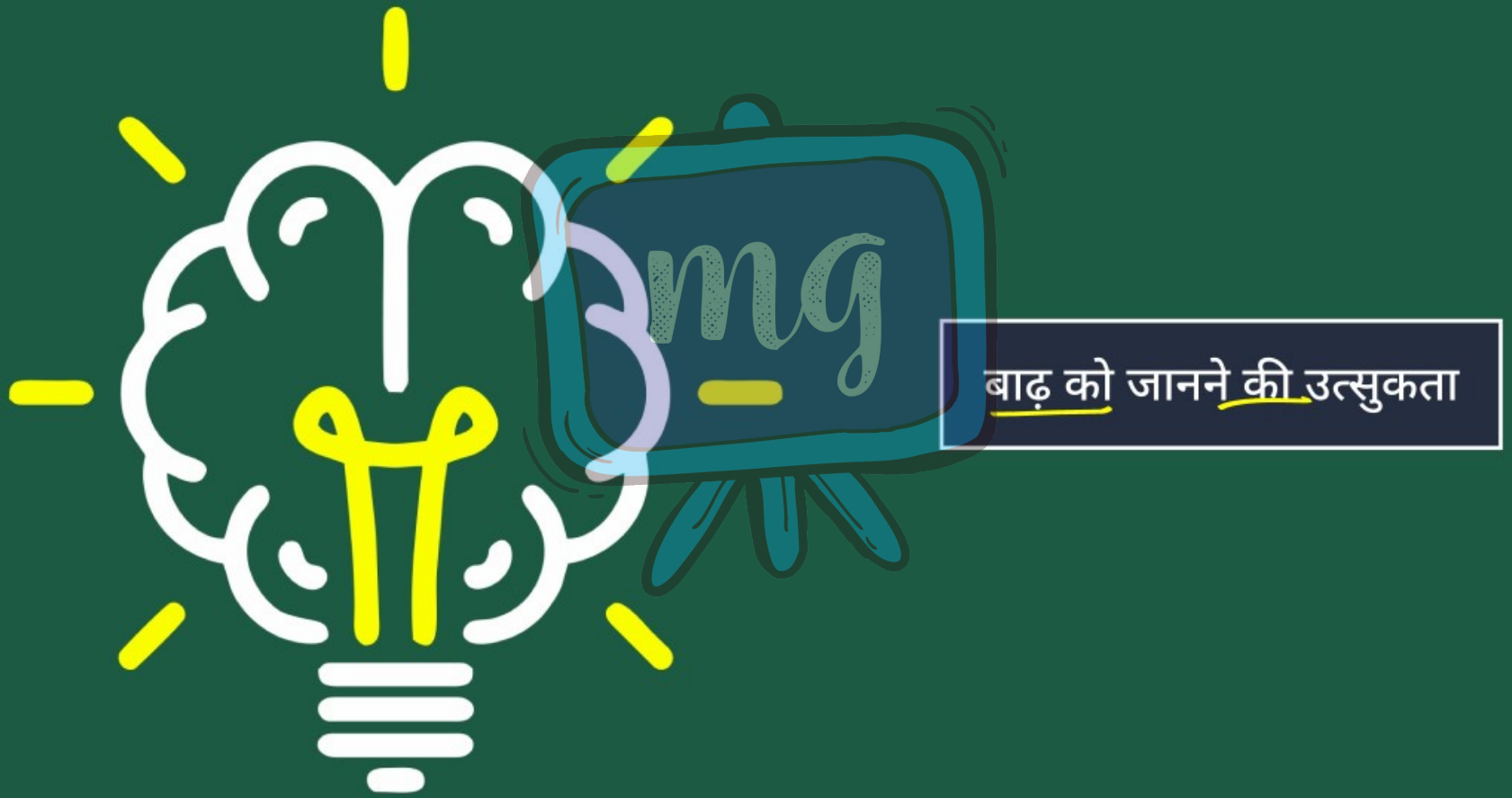

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1 लेखक को किस स्रोत से सूचना मिली कि गोलघर जल से घिर गया है?

अ अख़बार से

ब टेलीविज़न से

स बाँग्ला भाषा में सूचना से

द रेडियो से

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2 लेखक किसके साथ कॉफी हाउस जा रहे थे?

अ पत्नी के साथ

ब पत्रकार मित्र के साथ

स आचार्य-कवि मित्र के साथ

द किसी सामाजिक कार्यकर्ता के साथ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3 सड़क पर किस प्रकार के लोग पानी देखने निकले थे?

अ केवल पैदल लोग

ब सिर्फ सरकारी कर्मचारी

स ट्रक और मोटरसाइकिल वाले

द मोटर, स्कूटर, ट्रैक्टर, साइकिल, रिक्शा व पैदल सभी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4 कॉफी हाउस पर पहुँचने पर लेखक ने क्या दृश्य देखा?

अ वहाँ मेला लगा था

ब कॉफी हाउस खुला था

स वहाँ कोई नहीं था

द कॉफी हाउस बंद था और पानी तेजी से आ रहा था

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5 अंत में लेखक ने रिक्शावाले से क्या अनुरोध किया?

अ और आगे चलो

ब वापस लौट चलो

स कॉफी हाउस चलो

द घर छोड़ दो